3

मुखाकृति चित्रण

मुखाकृति चित्रण, व्यक्ति चित्रण अथवा छवि चित्रण चित्रकला की एक प्रमुख विधा है। इस पद्धति में हम व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं को दर्शाते हुए व्यक्ति विशेष की मुखाकृति चित्रित करते हैं। इस विधा में हम मुख्य रूप से मुखाकृति का चित्रण करते हैं तथा दर्शक उस चित्र को देखकर आसानी से पहचान जाता है कि यह चित्र अमुक व्यक्ति विशेष का है।

यथार्थवादी व्यक्ति चित्रण के सम्बन्ध में भारतीय साहित्य जैसे महाभारत, रामायण और पुराणों में भी उल्लेख मिलते हैं। अनेक ग्रंथों में कला एवं कला संबंधी सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है। वात्स्यायन रचित कामसूत्र में चित्रकला के षडांग के आधार पर चित्रकला के नियमों का विवेचन किया गया है।

मुखाकृति चित्रण में सबसे प्रमुख तत्व व्यक्ति के मुख का आकार का है। यह गोलाकार, अंडाकार, चौकोर और पंचभुज हो सकता है। मुख्य रूप से मुखाकृति में दो आँखे, दो भौहें, एक नाक, दो कान और एक मुँह होता है। परन्तु यह प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति विशेष में भी उसका बाह्य रूप भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में बदला हुआ दिखाई देगा। जब हम एक व्यक्ति को अलग-अलग कोणों से देखते हैं तो द्विआयामी चित्र पटल पर भी हमें अलग-अलग रूप में चित्रित करना पड़ेगा। इसी प्रकार एक ही व्यक्ति का चित्र अलग-अलग दृष्टितल से अर्थात आँख की सतह से देखें तो वह हमें भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देगा।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप :

- मुखाकृति की जानकारी प्राप्त कर उसका निर्माण करेंगे;
- मानव मुखाकृति के अनुपात का उल्लेख कर सकेंगे;
- एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की मुखाकृति किस प्रकार भिन्न है, इसकी जानकारी प्राप्त कर प्रस्तुत कर सकेंगे;

- मानव मुख के भावों को चित्र में किस प्रकार चित्रित करना है, इसकी जानकारी प्राप्त कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- चित्रकला के विभिन्न माध्यमों जैसे-पेंसिल, पेस्टल रंग, जलरंग, तैलरंग इत्यादि से मुखाकृति चित्रित कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

ड्राइंग बोर्ड, ड्राइंग शीट, हैंडमेड पेपर, पेंसिल-एचबी, 2बी, 4बी, 6बी, रबड़, रंग-पेंसिल रंग, पेस्टल रंग, जल रंग ब्रुश (2, 4, 6, 10, 12), आधे इंच का चपटा ब्रश, कलर मिलाने का।

3.1 मुखाकृति चित्रण की विधि/तकनीक

मुखाकृति चित्रण के लिए सर्वप्रथम हम सामने बैठे व्यक्ति को सूक्ष्मता से देखेंगे कि उसकी बाह्य मुखाकृति, गोलाकार, अंडाकार, आयातकार, चौकोर अथवा पंचभुजाकार कैसी है? जैसा कि चित्र 3.1 में दिखाया गया है।

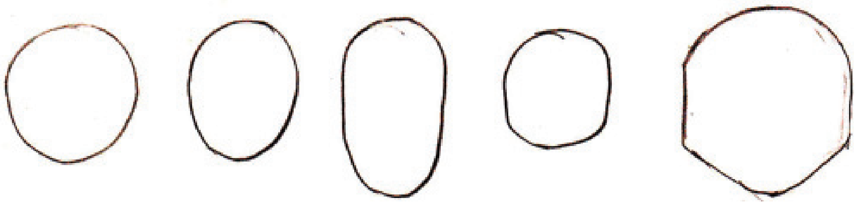

चित्र 3.1

सामने बैठे व्यक्ति को यदि हम अलग-अलग कोण से देखें तो उस व्यक्ति की मुखाकृति हमें भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देगी। जैसे सम्मुख मुद्रा, तीन चौथाई मुद्रा अथवा एक चश्म चेहरा। उदाहरण हेतु हम चित्र 3.2 में देख सकते हैं।

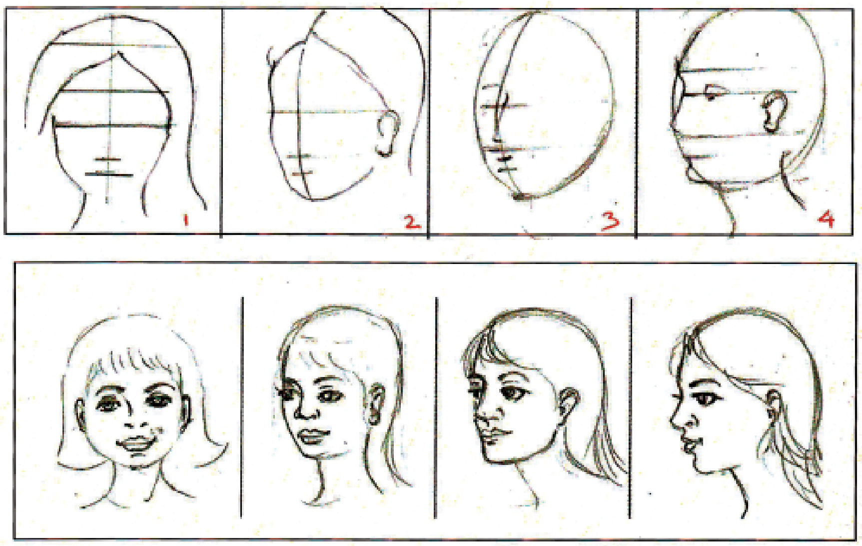

चित्र 3.2

इसी प्रकार जब सम्मुख बैठे व्यक्ति को हम अलग–अलग दृष्टि–सतह से देखते हैं तो वही व्यक्ति हमें अलग–अलग रूप में दिखाई देता है। जब हमारी आँख की सतह ऊपर होती है तो हमें उसके बालों वाला हिस्सा अधिक दिखाई देता है और जब हमारी आँख की सतह नीचे होती है तो हमें चेहरे का भाग अधिक दिखने लगता है। जब हमारी आँख की सतह सम्मुख व्यक्ति की आँख की सतह के बराबर हो, तो चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जैसे कि फोटोग्राफर पासपोर्ट साइज फोटो खिंचता है। जब हमारी आँख की सतह नीचे हो जाती है और सम्मुख बैठा व्यक्ति हमसे ऊपर हो जाता है तो हमें बालों का हिस्सा कम और ठोड़ी के नीचे का हिस्सा अधिक दिखाई देता है। उदाहरण के लिए हम चित्र 3.3, देखकर अपनी स्केच बुक में अभ्यास कर सकते हैं।

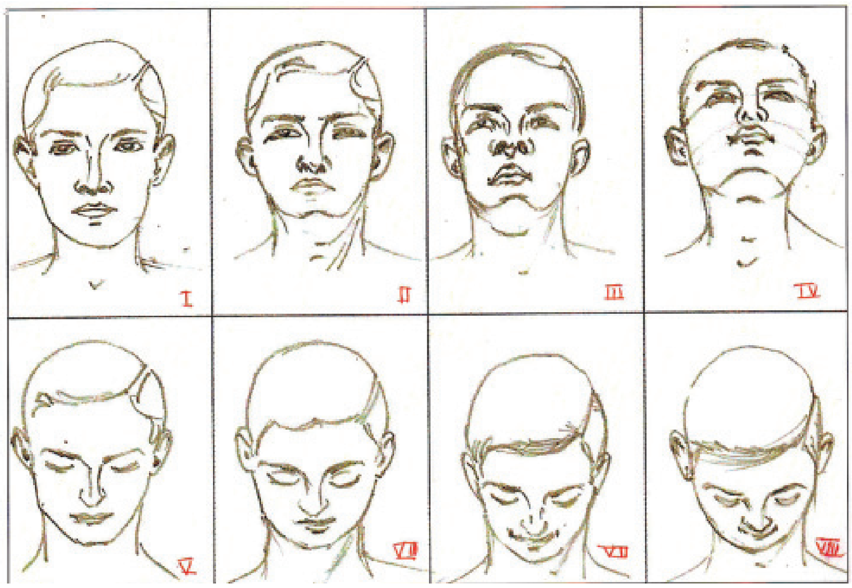

चित्र 3.3

I. आँख की सतह पर स्थित मुखाकृति

II. आँख की सतह से थोड़ा ऊपर की मुखाकृति,

III. मुखाकृति आँख की सतह से ऊपर होने के कारण ठोड़ी के नीचे का भाग अधिक और बालों का भाग कम दिखाई देता है।

IV. मुखाकृति आँख की सतह से अधिक ऊपर होने के कारण हमें सिर के बालों का भाग नहीं दिखाई देता है, जबकि ठोड़ी के नीचे का भाग बहुत अधिक दिखाई देता है।

V–VIII. इन चित्रों में इसके विपरीत अवस्था में सिर के बाल अधिक से अधिक दिखाई देता है, जबकि ठोड़ी वाला भाग कम से कम दिखाई देता है।

मुखाकृति चित्रण की प्रमुख विशेषता व्यक्ति विशेष की चारित्रिक भावों को प्रमुखता से दर्शाना है। भावों के कारण मुखाकृति की मांसपेशियों में परिवर्तन हो जाता है और वह भिन्न–भिन्न रूप में दिखाई देती हैं, जैसे शांत मुद्रा, दुखी मुद्रा, हास्य मुद्रा, चिंतित मुद्रा इत्यादि। नौ रस के आधार पर वह भिन्न–भिन्न रूप में दिखाई देने लगता है, जैसा कि चित्र 3.4 में दर्शाया गया है।

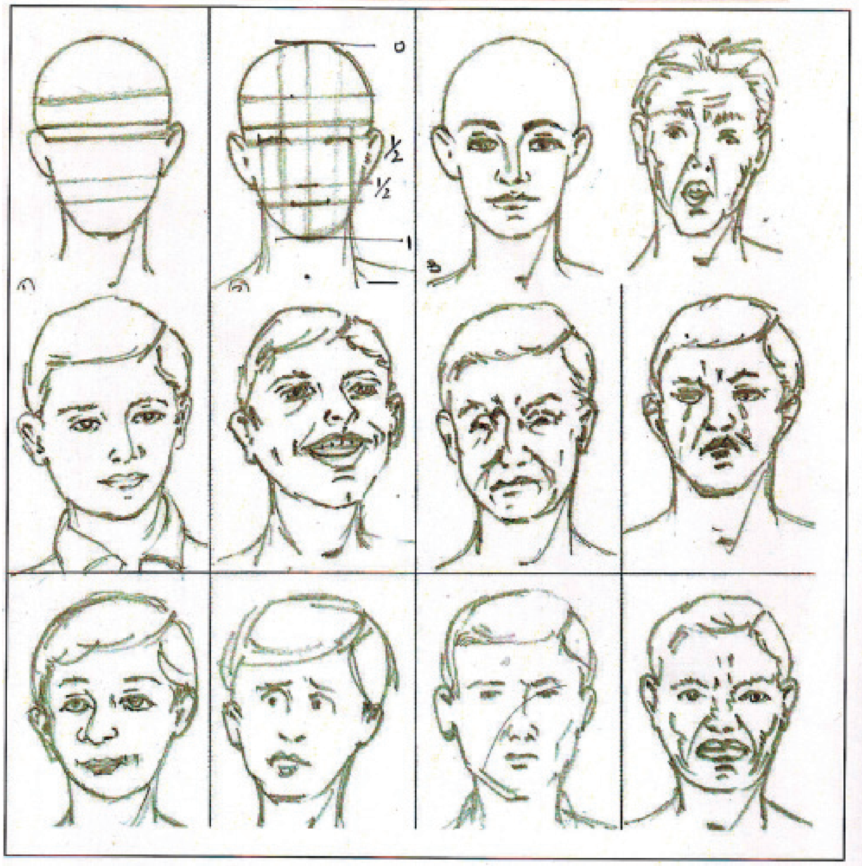

चित्र 3.4

स्मृति से मुखाकृति बनाते समय हमें उस व्यक्ति विशेष की चारित्रिक विशेषताओं का विशेष रूप से ध्यान में रखना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की चारित्रिक विशेषता, भाव-भंगिमा भिन्न-भिन्न होती है। इन विशेषताओं के आधार पर हम उस व्यक्ति को आसानी से पहचान लेते हैं। जैसे भगवान राम और लक्ष्मण के चित्र में राम के साँवले रंग और लक्ष्मण के गोरे रंग से हम पहचान लेते हैं कि कौन सी मुखाकृति किसकी है? बालों में लगे मोर पंख से हम आसानी से पहचान लेते हैं कि राम कौन हैं और कृष्ण कौन हैं? इसी प्रकार महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर के चित्रों को भी उनके चारित्रिक विशेषताओं के कारण आसानी से पहचान लेते हैं और उन्हें चित्रित करने में बड़ी सुविधा होती है।

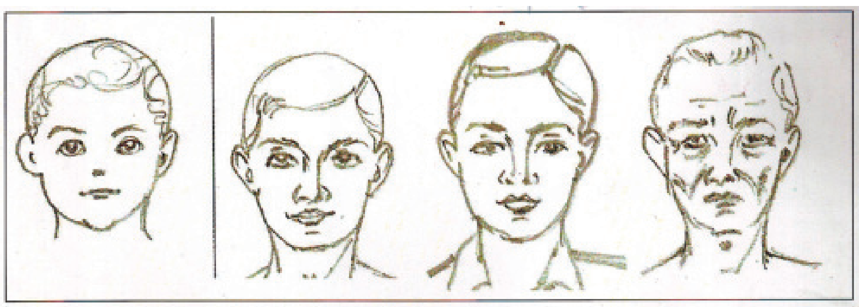

चित्र 3.4(क)

चित्र 3.4(ख)

मुखाकृति चित्रण का कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व छात्र/छात्राओं को मुखाकृति के विभिन्न भागों जैसे आँखे, नाक, कान और होंठ इत्यादि की विभिन्न अवस्थाओं एवं दृष्टि बिन्दुओं के आधार पर चित्रण करने का अभ्यास करना चाहिए, जैसा कि (चित्र 3.5 में दर्शाया गया है)। इसी प्रकार चित्र 3.6 में दर्शाए अनुसार मुखाकृति को विभिन्न अवस्थाओं जैसे पार्श्व एवं सम्मुख मुखाकृतियों की विभिन्न अवस्थाओं को भी चित्रित करने का अभ्यास करते रहना चाहिए।

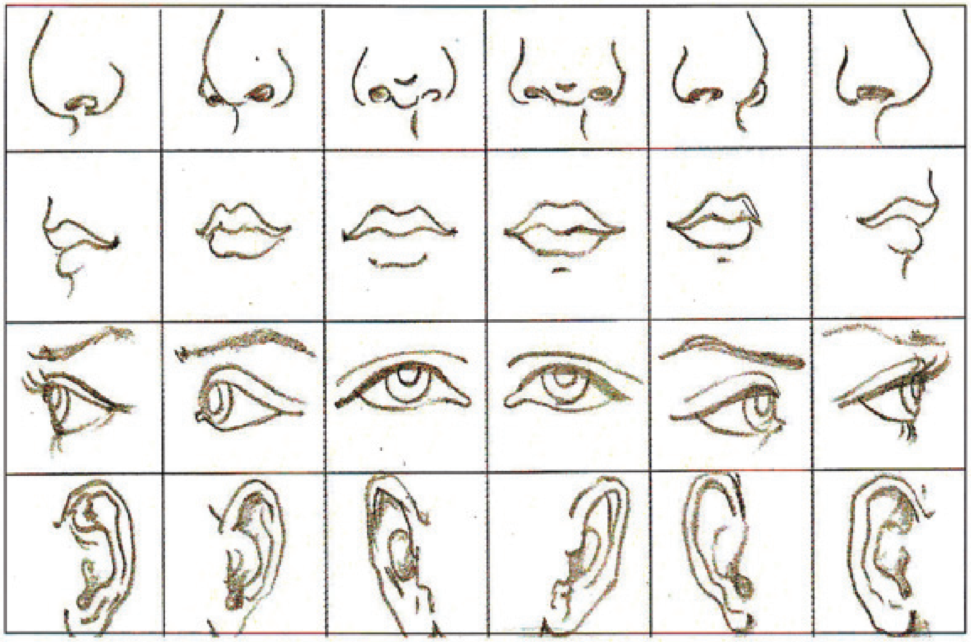

चित्र 3.5

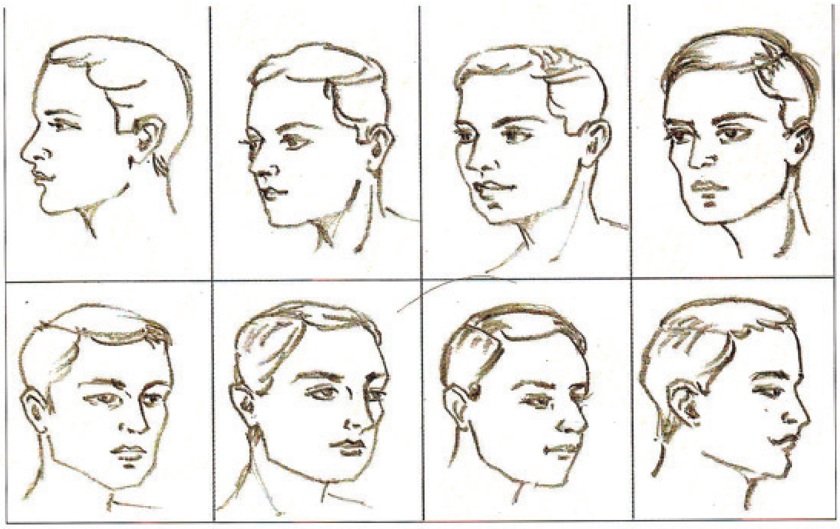

चित्र 3.6

मानव मुख का आनुपातिक संबंध

मानव शरीर के विभिन्न अंगों का आपस में एक आनुपातिक संबंध होता है। यदि किसी मानव के सिर को एक इकाई माने तो उसका पूरा शरीर उसके सिर 7½ गुण होता है। इसी प्रकार चेहरे में भी आँख, नाक, कान, इत्यादि में एक आनुपातिक संबंध होता है। अत: साधारण अथवा आदर्श मुखाकृति बनाते समय सबसे पहले हम मुख की बाह्य आकृति बनाएँगे। यह गोल, अण्डकार, आयताकार, वर्गाकार अथवा पंचभुजाकार हो सकती है। जैसा भी चित्र बनाना चाहें पहले हम उस आकृति को चुन लें। चित्र 3.1 के अनुसार हम सबसे पहले मुखाकृति के बाह्य आकार को चित्रित करेंगे। इसके पश्चात चित्र 3.4 के भाग 1 के अनुसार मुखाकृतियों के अनुसार यहाँ पर मुखाकृति की आँख और नाक को रेखांकित करेंगे। अब मध्य भाग के ऊपर और नीचे वाले हिस्सों को भी दो बराबर भागों में बाँटेंगे। नीचे वाले भाग में नाक की लम्बाई और कान की लम्बाई भी आ जाती है। ऊपर वाले हिस्से में बालों का स्थान निर्देशित हो जाता है। नाक के नीचे वाले हिस्से को फिर दो हिस्सों में बांटते हैं। इस रेखा पर ऊपर की ओर नीचे के होंठ को बनाया जाता है। आँख की रेखा और ऊपर की रेखा के मध्य भाग को एक बार फिर विभाजित करते हैं। इस भाग में भौहें चित्रित किए जाते हैं। मुखाकृति की रेखा संख्या 3 जो मध्य भाग में होती है जहाँ पर आँखो को चित्रित किया जाता है; इस रेखा को सम्मुख मुखाकृति चित्र में पाँच भागों में बांट देते है। इसके दूसरे और तीसरे भाग में आँख की चौड़ाई आ जाती है। तीसरे और चौथे भाग में दोनों आँखों के बीच का अंतर आ जाता है। चौथे और पाँचवे भाग में दूसरी आँख को चित्रित किया जाता है। प्रत्येक आँख के मध्य भाग में गोलाकार पुतली को चित्रित किया जाता है। चित्र 3.1 और चित्र 3.5 से लम्बवत रेखा नीचे की ओर बनाएं तो यह रेखा मुखाकृति को जहाँ पर काटती है, वहाँ से हम गर्दन की रेखाओं को खींचते हैं, जिससे गर्दन की मोटाई भी आ जाती है। यदि गर्दन के मध्य बिन्दु से एक सिर जितनी इकाई को दाहिनी और बाई ओर बनाएं तो हमें कंधों का अनुपात प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार हम एक आदर्श मुखाकृति का सृजन कर लेते हैं।

अभ्यास 1

रंगीन पेंसिल से मुखाकृति चित्रण

प्रथम चरण

मुखाकृति को पूर्ण रेखांकित करने के पश्चात हम देखते हैं कि यह द्विआयामी तल पर एक द्विआयामी मुखाकृति दिखाई देती है। इस मुखाकृति में त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करने के लिए हम 2बी, 4बी, पेंसिल की सहायता से छाया-प्रकाश के प्रभाव को दर्शाते हुए त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। इन पेंसिलों का उपयोग करते हुए हम हल्के तान (लाइट शेडिंग) से गहरी तान (डार्क शेडिंग) की तरफ जाते हैं। रंगीन पेंसिल से रंगांकन करते समय उपर्युक्त तकनीक का ध्यान रखते हुए हमें हल्की तान से गहरी तान की तरफ जाना पड़ता है।

द्वितीय चरण

इस पद्धति में चेहरे के रंग, बालों के रंग इत्यादि को पूर्णत: सादृश्य बनाना चाहिए, जिससे कि दर्शक उस चित्र को देखकर आसानी से पहचान जाए कि यह अमुक व्यक्ति का चित्र है।

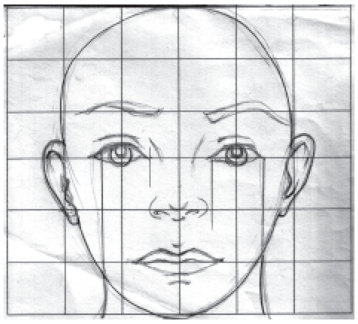

चित्र 3.7

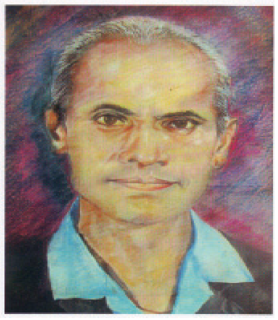

चित्र 3.7(क)

तृतीय चरण

चित्र 3.8 में एक वृद्ध व्यक्ति के चित्र को हमने रंगीन पेंसिल से बनाया है। इस चित्र में हमने तिरछी रेखाओं से छाया प्रकाश का प्रभाव उत्पन्न किया है।

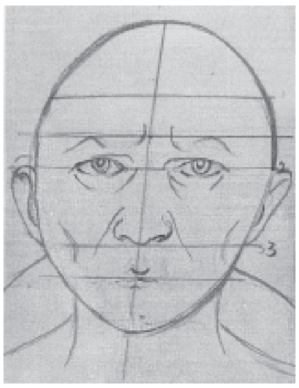

चित्र 3.8

चित्र 3.8(क)

पेस्टल रंगों द्वारा व्यक्ति चित्रण की विधि भी रंगीन पेंसिल की तकनीक के समान ही है। परन्तु इस विधि में आवश्यकता पड़ने पर गहरी तान के ऊपर हल्की तान का भी प्रयोग तैल रंगों की भाँति किया जा सकता है। अति प्रकाश दिखाने के लिए गहरी तान वाले रंगों के ऊपर हल्की तान की रंगत लगाने से चित्र बिल्कुल सजीव सा प्रतीत होता है, जैसा कि चित्र 3.9 में हमने दर्शाया है। यह चित्र चार साल के एक बच्चे का है। इस चित्र में बच्चे के मुख पर मासूम एवं निश्छल मुस्कान दिखाई दे रही है एवं आँखों में एक चंचलता दिखाई दे रही हैं। पेस्टल रंगों का बहुत सुंदरता से प्रयोग किया गया है। (चित्र 3.9)

चित्र 3.9

अभ्यास 2

जल रंग से मुखाकृति चित्रण

जल रंगों से मुखाकृति बनाने के लिए हम पहले पेंसिल से रेखाकृति बनाते हैं। तत्पश्चात जल रंग करने से पहले इस रेखाकृति को हम रबड़ से हल्का कर लेते हैं क्योंकि जल रंग पारदर्शी होते हैं। यदि हम रेखाचित्र को हल्का नहीं करेंगे तो पेंसिल की लाइनें जल रंग के नीचे से दिखाई देंगी। जलरंग तकनीक में भी हम मुखाकृति चित्रण को हल्की तान से रंग करना प्रारम्भ करेंगे। इसके बाद क्रमशः धीरे-धीरे हल्की, मध्यम, गहरी और अति गहरी तान वाली रंगतों का प्रयोग करेंगे।

प्रथम चरण

जल रंगों के चित्रण में एक बात अवश्य ध्यान रखने वाली होती है कि जहाँ पर हमें ज्यादा प्रकाश दिखाना हो, वहाँ हम ड्राइंग शीट को सफेद छोड़ देते हैं। इसी प्रकार आँखों की पुतली के साथ

वाले सफेद हिस्से पर भी कोई रंग नहीं लगाते हैं। वहाँ ड्राइंग शीट सफेद छोड़ देते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जल रंगों में हम सफेद रंग का प्रयोग नहीं करते हैं, और न ही रंगों की हल्की तान बनाने के लिए किसी रंग में सफेद रंग को मिलाते हैं। क्योंकि सफेद रंग को जल रंग में मिलाया जाता है तो वह तान अपारदर्शी हो जाती है और उसमें भावहीनता का प्रभाव आ जाता है।

चित्र 3.10

जल रंग के चित्रण का एक उत्कृष्ट उदाहरण चित्र 3.10 दर्शाया गया है। यह चित्र एक युवा श्रमिक का है, इसके चेहरे पर मूँछे एवं दाढ़ी है और बाल बिखरे हुए हैं। चेहरे पर तान के माध्यम से दृढता एवं कठोरता का भाव परिलक्षित होता है। इस चित्र में हमने अत्यधिक प्रकाश दिखाने के लिए चित्र तल के सफेद पट का उपयोग किया है।

द्वितीय चरण

चित्र 3.10(क) जलरंग का एक अन्य उदाहरण है जिसमें चित्र, कागज के स्थान पर सिल्क के कपड़े पर बनाया गया है। यह चित्र एक नवयुवक का है।

चित्र 3.10(क)

अभ्यास 3

तैलरंग से मुखाकृति चित्रण

तैल रंग में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस विधि में हम गहरी तानों से हल्की तान की तरफ जाते हैं अर्थात् हम अपने चित्र पटल पर सर्वप्रथम मुखाकृति की छाया वाले भाग पर गहरी तानों को लगाते हैं। इसके बाद मध्यम और हल्की तान का प्रयोग करते हैं और सबसे अंत में जहाँ-जहाँ अति प्रकाश दिखाना हो वहाँ-वहाँ सफेद अथवा सफेद रंग में बहुत हल्के, पीला रंग मिलाकर तान का प्रयोग करते हैं। जैसे कि चित्र 3.11 में मशहूर चित्रकार विन्सेट वैनगाग्व् ने अपने स्वयं के व्यक्ति चित्र को तैल माध्यम से पीले रंग की विभिन्न तानों के प्रयोग द्वारा अपना चित्र बनाया है। इस चित्र की पृष्ठभूमि गहरी है जो काले, नीले, हरे रंग से बनाई गई है। इस चित्र में भाव बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा है। इस चित्र में उनकी मन: स्थिति आँखों के माध्यम से स्पष्ट दिखाई देती है।

चित्र 3.11

आपने क्या सीखा

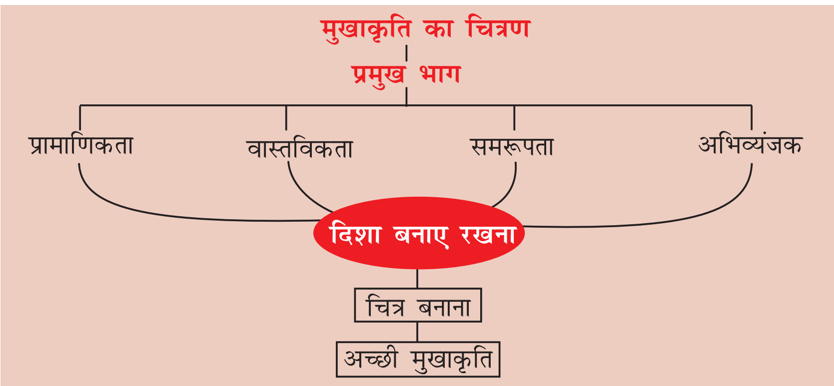

पाठांत प्रश्न

1. पाठ में दी गई विधि के अनुसार आँख, नाक, कान, होंठ इत्यादि का विभिन्न दशाओं में चित्रण करें।
2. किसी भी एक मुखाकृति का रेखांकन करें।
3. किसी भी एक मुखाकृति को पेंसिल शेंडिग के माध्यम से छाया-प्रकाश दिखाते हुए चित्र पूर्ण करें।
4. अपने परिवार के किसी सदस्य अथवा दोस्त का व्यक्ति चित्र बनाएँ।
5. रंगीन पेंसिल के माध्यम से किसी भी महापुरुष का व्यक्ति चित्र बनाएँ।

शब्दकोश

यथार्थवादी	वास्तविक
एक चश्म चेहरा	साइड पोज, जिसमें केवल एक आँख दिखती है।

मॉड्यूल - 2

विभिन्न संरचना, पोस्टर और बनावट का निर्माण

4. संयोजन के रचनात्मक रूप
5. पोस्टर निर्माण
6. बनावट का निर्माण और छपाई